।। शिनाख्त ।।

शिनाख्त कर ली है मैंने, कातिलों की,
वही है वे जो चाहते है,
दूर रहूं ,आंख उठाकर भी न देखू
मेरी आंखेां की बाढ और टूटते हुए सपने,
अच्छे लगते है उनको ।
धुन का पक्का हूं मैं भी
बदले का भाव मेरे मन में नही है,
ना किसी तरह का कोई बैर भी ।
निखरी छाप छोड़ना चाहता हूं
कातिलों के हमले थम नही रहे हैं
चाहते हैं कैदी बना रहूं ।
विकास की दौड़ में बहुत पीछे छूट गया हूं
कातिल है कि पीछे ही खींचने में जुटे है,
मैं आगे जाना चाहता हूं
शदियों की खींचातानी में पर उखड गये हैं
तरक्की से वंचित हो गया हूं ।
खींचातानी में पांव नही जमा पा रहा हूं
धैर्य मजबूत होता जा रहा है
विकास की बयार चौखट तक नही पहुंच रही है
कुछ लोग धर्म–जाति का जहर बो रहे है ।
सच यही विकास के दुश्मन है,
समाज को बिखण्डित करने के बहाने है,
नफरत के तराने है
उग्रवाद के पोषक है,वंचितों के शोषक है ।
शिनाख्त तो हो गयी है कातिलों की
खुद को खंगाल ले,मानवता का दामन थाम ले,
कर दे कातिलों को अपने से बहुत दूर
क्योंकि ये कातिल विकास में बाधक है
और कायनात के दुश्मन भी .....।

नन्दलाल भारती